वर्तमान पाठ्यक्रम में दोषः भारतीय परिप्रेक्ष्य में

डॉ. देवेन्द्र सिंह चम्याल [1]

[1] f”क्षा संकाय, सोबन सिंह जीना वि”वविद्यालय, परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

ABSTRACT:

इस शोध में वर्तमान भारतीय पाठ्यक्रम में दोषों का अध्ययन किया गया है। आधुनिक विचारधारा के अनुसार f”क्षा के तीन अंग f”क्षक, f”क्षार्थी तथा पाठ्यक्रम है। f”क्षण की प्रक्रिया में इन तीनों का महत्वपूर्ण स्थान है। कक्षा में क्या ?, कितना ? व कब ?पढ़ाये जाये, ये सब पाठ्यक्रम के माध्यम द्वारा ही नि”चत होता है। पाठ्यक्रम के अभाव में उसका f”क्षण कार्य उद्दे”यहीन और अव्यवस्थित हो जाता है। **हार्न महोदय** ने, f”क्षा की प्रक्रिया के चार तत्वों– विद्यार्थी, पाठ्यक्रम, शैक्षिक वातावरण तथा f”क्षक को आव”यक माना हैं। विद्यालय में होने वाली क्रियाओं में पाठ्यक्रम का अपना वि”िष्ट महत्व है। बालक के व्यक्तित्व निर्माण में पाठ्यक्रम का अपना वि”िष्ट स्थान है। f”क्षा की प्रक्रिया एक निरन्तर प्रक्रिया है, **जॉन डीवी** ने इसी प्रक्रिया को त्रिमुखी प्रक्रिया बताया है। इसका तृतीय महत्वपूर्ण अंग पाठ्यक्रम है जो f”क्षा की दि”ाा का निर्धारण करता है और बालक को यह बताता है कि उसको क्या पढ़ना है। f”क्षक को पता होता है कि उसे क्या–क्या पढ़ाना है, और f”क्षक आव”यक तैयारी कर बच्चों को पढ़ाता है। इन समस्त बातों का बोध पाठ्यक्रम के माध्यम से ही होता है। समय, स्थान तथा वातावरण की भिन्नता के साथ–साथ पाठ्यक्रम का स्वरुप भिन्न हो सकता है। परन्तु पाठ्यक्रम का होना अत्यधिक आव”यक है। **सेलर एवं अलेक्जेंडर के भाब्दो में– ''वॉछित परिणामों को लाने के लिए विद्यालय में और विद्यालय के बाहर किये जाने वाले सभी प्रयासों का योग ही पाठ्यक्रम है।'' (The total effort of the school in to bring about desired outcomes in school and out of the school situation.)** पाठ्यक्रम f”क्षा का एक अभिन्न अंग है। पाठ्यक्रम ज्ञान का कोई भण्डार नहीं है। यह तो विद्यालय के हाथों एक ऐसा यन्त्र है जिसकी सहायता से वह वि”िष्ट उद्दे”यों की प्राप्ति करता है। पाठ्यक्रम f”क्षक को यह बताता है कि उसे किसी कक्षा वि”ाष को क्या और कितना पढ़ाना है। इस जानकारी के आधार पर आव”यक तैयारी करता है तथा सम्पूर्ण वर्ष के कार्य का उचित विभाजन करता है। सीखने के अनुभवों की नियोजित, क्रमबद्ध तथा श्रेणीबद्ध रखने के ढंग को ही **'पाठ्यक्रम (Curriculum)** कहते हैं।

KEYWORDS:

वर्तमान, पाठ्यक्रम, दोष, भारतीय, परिप्रेक्ष्य।

प्रस्तावना–

पाठ्यक्रम का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है जिसमें सभी पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ शामिल हैं। पाठ्यक्रम की प्रकृति सैद्धान्तिक अधिक तथा व्यावहारिकता कम होती है, इसका तार्किक आकलन किया जाता है। पाठ्यक्रम में चार तत्वों f”क्षा के उद्दे”यों, f”क्षण आयाम, विधियाँ, परीक्षण की प्रणाली तथा पृष्ठपोषण का समावे”ा होता है। पाठ्यक्रम में विद्यालय प्रबन्धन की प्रणाली पर विचार करके व्यवस्था की जाती है, विद्यालय परिसर पाठ्यक्रमों के अनुरूप होते हैं। पाठ्यक्रम में ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक तीनों पक्षों का समावे”ा होता है। पाठ्यक्रम का मुख्य आधार द”ान, शैक्षिक मूल्य एवं शैक्षिक उद्दे”य होते हैं। पाठ्यक्रम में पाठ्यचर्या, पाठ्य सहगामी–क्रियाएँ तथा शैक्षिक पर्यावरण शामिल हैं। पाठ्यक्रम का उद्दे”य विभिन्न विषयों को समाहित करके सन्तुलन बनाना है। पाठ्यक्रम का निमाण सामाजिक आव”यकता, मानवीय गुणों तथा सामाजिक द”ान पर आधारित होता है तथा इसमें सर्वाधिक महत्व राष्ट्रीय विकास को दिया जाता है। पाठ्यक्रम से f”क्षक को अपने f”क्षण के स्वरूप का निर्धारण करने, f”क्षण का संचालन करने तथा छात्रों की उपलब्धियों को जानने का अवसर प्राप्त होता है। f”क्षार्थियों को अपने f”क्षा के उद्दे”यों को पूरा करने में मदद मिलती है। समाज पाठ्यक्रम द्वारा नवीन मंतव्यों को जानता है तथा उसके अनुरूप जीवन शैली एवं मान्यताओं को समय के साथ बदलता जाता है। पाठ्यक्रम से ही समाज में पारम्परिक मान्यताओं के स्थान पर परिवर्तित मान्यताओं का दिग्द”ान होता है। समाज एवं संस्कृति के उन्नायक तत्वों को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाता है। यह तत्व f”क्षा एवं समाज दोनों के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

वर्तमान पाठ्यक्रम के दोष

(Defects of the Present Curriculum)

भारतीय f”क्षा के प्रचलित पाठ्यक्रम का निर्माण ब्रिटि”ाकालीन f”क्षा के उद्”यों को प्राप्त करने के लिए किया गया है। परिणामस्वरूप इसके अन्तर्गत उन सभी विचारों क्रियाओं तथा अनुभवों एवं विषयों का अभाव है जो स्वतन्त्र भारत के बालकों को उत्तम नागरिक बना सके। यही कारण है कि f”क्षक, बालक तथा अभिभावक सभी लोग आये दिन निन्दा करते रहते है। वर्तमान पाठ्यक्रम के दोष निम्न है –

- वर्तमान पाठ्यक्रम लक्ष्यों व उद्दे”यों की प्राप्ति नहीं करता है।
- वर्तमान पाठ्यक्रम विषय केन्द्रित व प्रकरण केन्द्रित है।
- इसमें अनुपयुक्त, निरर्थक व अरुचिपूर्ण प्रकरणों व समस्याओं का समावे”ा है।
- इसमें प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में कोई वि”ाष सह–सम्बन्ध नहीं है।
- यह जीवन से असम्बन्धित है तथा वर्तमान पाठ्यक्रम में नैतिक तथा योग शिक्षा का अभाव है।
- वर्तमान पाठ्यक्रम में अवका”ा के समय के उपयोग की व्यवस्था नहीं है।
- विविधता व लचीलेपन का अभाव है।
- वर्तमान पाठ्यक्रम परीक्षाओं पर अधिक बल देता है।
- f”क्षा के औपचारिक साधनों का प्रयोग नहीं होता है।
- वर्तमान पाठ्यक्रम में सर्जनात्मक कार्य का अभाव है।
- यह पुस्तकीय ज्ञान पर बहुत अधिक बल देता है।
- इस पर परीक्षाओं का पूर्ण अधिकार और नियन्त्रण है।
- इसका दृष्टिकोण संकुचित है।
- इसका निर्माण वि”ाष रुप से f”क्षा–संस्थाओं में प्रवे”ा पाने के लिए किया जाता है।

- इसका निर्माण पाठ्यक्रम वि"ोषज्ञ अपने दृष्टिकोण से, न कि छात्रो के दृष्टिकोण से करते हैं।
- इसके पाठ्य–विषय साहित्यिक, सैद्धान्तिक, अनाव"यक तथ्यों और महत्वहीन विवरणों से भरे हुए हैं।
- वर्तमान पाठ्यक्रम में तकनीकी एवं व्यावसायिक विषयों का अभाव है।
- छात्रों के मनोविज्ञान, रुचियों, आव"यकताओं और व्यैक्तिक विभिन्नताओं पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है।
- विषयों को अधिक बोझिल बना दिया गया है तथा आव"यकता से अधिक विषयों को स्थान दिया गया है, चाहे वे बालकों के लिए उपयोगी हो अथवा नही।

पाठ्यक्रम के दोषों को दूर करने के सुझाव

(Suggestions for Improving Curriculum)

वर्तमान पाठ्यक्रम के दोषों या कमियों को निम्न प्रकार से दूर किया जा सकता है–

- पाठ्यक्रम को बनाते समय f"ाक्षण के उद्दे"यों का निर्धारण सावधानीपूर्वक करना चाहिए। उद्दे"यों का निर्धारण बालक के विकास के सभी पक्षों यथा– ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम विभिन्न श्रेणियो में विभाजित करना चाहिए।
- पाठ्यक्रम निर्माण में लचीलेपन को ध्यान में रखना चाहिए।
- पाठ्यक्रम निर्माण बच्चों की रूचियों, आव"यकताओं एवं उनके व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर करना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में इस बात का ध्यान रखा जाय कि बच्चों को स्वयं करके सीखने के पर्याप्त अवसर मिले।
- पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार की f"ाक्षण सामग्री अर्थात श्रव्य, दृ"य तथा दृ"य–श्रव्य सामग्री तथा उनको उपयोग में लाने के लिए उचित निर्दे"ा दिये जाने चाहिए।
- विषय वस्तु का संगठन तार्किक क्रम में करना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में f"ाक्षकों एवं बच्चों के लिए स्पष्ट निर्दे"ा होने चाहिए।
- पाठ्यक्रम निर्माण के विभिन्न सिद्धान्तों, उपयोगिताओं, क्रिया"ाीलता, सामाजिक, सांस्कृतिक, सृजनात्मक मूल्यों व मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को आधार बनाकर पाठ्यक्रम निर्माण करना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में लिखित तथा अभ्यास कार्य के साथ–साथ मौखिक व गृहकार्य को भी महत्व दिया जाना चाहिए।
- बच्चों के अवका"ा के सदुपयोग के लिए भी पाठ्यक्रम में कुछ क्रियाओं को भी रखना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ–साथ अनुभवों की सम्पूर्णता को भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों व दैनिक जीवन से सम्बन्ध होना चाहिए।

REFERENCES

1. कपिल, एच.के. & सिंह, ममता (2013)। *सांख्यिकी के मूल तत्व*। आगराः अग्रवाल पब्लिके"ान्स।

2. कौल, लोके"ा (2012)। *शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली*। नोएडाः विकास पब्लि"िंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।

3. गेरैट, एच.ई. (2000)। *f"ाक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग*। लुधियानाः कल्याणी पब्लि"ार्स।

4. परिहार, ए.जी. एस. (2014)। शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन। मेरठः आर. लाल बुक डिप्पो।

5. पाण्डेय, आर. (2012) हिन्दी f"ाक्षण। आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

6. पाण्डेय, आर (2012) , उदीयमान भारतीय समाज में f"ाक्षक। आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

7. पाण्डेय के.पी. (1973)। f"ाक्षा में मूल्यांकन। मेरठ : मीनाक्षी प्रका"ान।

8. पाण्डेय, पी.डी. (1990) । भारतीय समाज ।ग्वालियरः कैला"ा पुस्तक सदन।

9. पाल, एच. एण्ड पाल आर. (2016)। पाठ्यचर्याः कल आज और कल। नई दिल्लीः f"ाप्रा पब्लिके"ान्स।

10. बि"नाई, उन्नति (2009)। विज्ञान f"ाक्षण। मेरठः आर. लाल बुक डिपो।

11. माथुर, एस.एस. & पाण्डेय, आर. (2016)। ज्ञान एवं पाठयक्रम । आगराः अग्रवाल पब्लिके"ान्स।

12. रावत, डी.एस. (1961)। विद्यालयों मे मापन एवं मूल्यांकन। आगरा : गया प्रसाद एण्ड सन्स।

13. रावत, मृदुला एवं कपूर बीना (2008)। f"ाक्षा में मापन, मूल्यांकन एवं सांख्यिकी। आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।

14. बैस्ट, जे. डब्ल्यू. (2011)। *रिसर्च इन एजुके"ान* । नई दिल्लीः पी०एच०आई० लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

15. राय, पी. & राय, सी. पी. (2012)। *अनुसंधान परिचय* । आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।

16. Best, J. W., & Kahn, J. V. (2014). *Research in education.* Delhi: PHI Learning Private Limited.

17. Singh, R.K. (2010). *Mechanics of research writing.* Bareilly: Prakash book depot.

18. Taneja, V. R. (1986). *Educational Thought and Practice.* New Delhi: Sterling Publishers Private Limited.

वेबसाइट

1. www.google.com

2. www.sodhganga.inflibnet.ac.in